Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

जुलाई/2021ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

JULY-2021

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Syed Tufail Ahmad Shahbaz ✆8968184270
Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issue

मज्लिस अंसारुल्लाह चिन्ताकुंटा(ज़िला महबूबनगर, तेलंगाना) द्वारा लगाए गए वाटर फ़िल्टर का उद्घाटन करते हुए मंडल अधिकारी और अंसार देखे जा सकते हैं ।

मज्लिस अंसारुल्लाह चिन्ताकुंटा (ज़िला महबूबनगर, तेलंगाना) द्वारा लगाए गए वाटर फ़िल्टर का उद्घाटन करने के बाद सामूहिक दुआ करते हुए।

मज्लिस अंसारुल्लाह पालक्काड,त्रिश्शूर (केरल) द्वारा एक सरकारी अधिकारी को "World Crisis and the Pathway to Peace" पुस्तक भेंट करते हुए।

मज्लिस अंसारुल्लाह पालक्काड,त्रिश्शूर (केरल) द्वारा एक पोलीस अधिकारी को "World Crisis and the Pathway to Peace" पुस्तक भेंट करते हुए।

तिथि 10-4-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह शिमोगा (कर्णाटक) में आयोजित तरबियती इजलास में हाज़िर अतिथिगण का दृश्य।

तिथि 10-4-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह शिमोगा (कर्णाटक) में आयोजित तरबियती इजलास के स्टेज का दृश्य।

मुस्लेह मौऊद दिवस के अवसर पर अहमदाबाद (गुजरात) में मज्लिस अंसारुल्लाह द्वारा करवाए गए म्यूज़िकल चेयर का दृश्य।

मुस्लेह मौऊद दिवस के अवसर पर अहमदाबाद (गुजरात) में मज्लिस अंसारुल्लाह द्वारा करवाए गए शॉट पुट का दृश्य।

तिथि 10-4-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह चेलकरा (केरल) द्वारा आयोजित वार्षिक इज्तिमा के खेलों का दृश्य।

मज्लिस अंसारुल्लाह सोरो (ओडिशा) द्वारा आयोजित पिकनिक का दृश्य।

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
सय्यद तुफ़ैल अहमद शहबाज़
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم   نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم   وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْد

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19   **जुलाई 2021**   **Issue - 7**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा का उच्च स्थान	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन सहाबा का नमूना अपनी जमाअत में देखना चाहता हूं।	6
हज़रत सूफी नबी बख़्श साहिब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो (313 प्रमुख सहाबा में से एक)	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

(सूर: अत्तौब: आयत 100)

अनुवाद - और मुहाजिरीन और अन्सार में से प्राथमिकता ले जाने वाले अव्वलीन और वे लोग जिन्हों ने नेक कर्मों के साथ उनका अनुकरण किया, अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वे उस से राज़ी हो गए और उसने उनके लिए ऐसी जन्नतें तैयार की हैं जिनके दामन में नहरें बेहती हैं वे हमेशा उनमें रहने वाले हैं यह बहुत महान सफलता है

दर्सुल हदीस

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَللهَ اَللهَ فِيْ اَصْحَابِيْ لَا تَتَّخِذُوْهُمْ عَرَضًا بَعْدِيْ فَمَنْ اَحَبَّهُمْ فَبِحُبِّيْ اَحَبَّهُمْ وَمَنْ اَبْغَضَهُمْ فَبِبُغْضِيْ اَبْغَضَهُمْ وَمَنْ آذَاهُمْ فَقَدْ آذَانِيْ وَمَنْ آذَانِيْ فَقَدْ آذَى اللهَ مَنْ آذَى اللهَ يُوْشِكُ اَنْ يَّأْخُذَهٗ۔

(तिरमज़ी भाग 2)

अनुवाद - हज़रत अब्दुल्लाह बिन मग़फ़ल रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से काम लेना , उन्हें तअना तथा लांछन का निशाना न बनाना। जो व्यक्ति उनसे मुहब्बत करेगा तो वह दरअसल मेरी मुहब्बत के कारण से करेगा। और जो व्यक्ति उनसे द्वैष रखेगा दरअसल वह मुझ से द्वैष के कारण से उन से द्वैष रखेगा। जो व्यक्ति उनको दुख देगा उसने मुझको दुख दिया और जिसने मुझे दुख दिया इस ने अल्लाह को दुख दिया । और जिसने अल्लाह को दुख दिया और नाराज़ किया तो ज़ाहिर है वह अल्लाह की पकड़ में है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

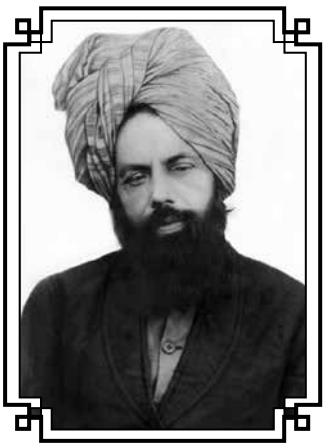

"सहाबा किराम का गिरोह अजीब गिरोह, सम्मान योग्य तथा अनुकरण योग्य गिरोह था।

"सहाबा का उदाहरण देख लो। दरअसल सहाबा किराम के नमूने ऐसे हैं कि समस्त नबियों के उदाहरण हैं। ख़ुदा को तो कर्म ही पसन्द हैं। उन्होंने बकरियों की तरह अपनी जानें दें और उनो उदाहरण ऐसे हैं जैसे नबुव्वत की एक हैकल आदम अलैहिस-सलाम से चली आती थी। परन्तु सहाबा किराम ने चमका कर दिखला दी और बतला दिया कि सच्चाई और वफ़ादारी इसे कहते हैं.. फिर जैसी बे आरामी का जावन उन्होंने(अर्थात सहाबा किराम ने) व्यतीत किया इस का उदाहरण कहीं नहीं पाया जात। सहाबा किराम का गिरोह अजीब गिरोह सम्मान योग्य और अनुकरण योग्य गिरोह था। उनके दिल विश्वास से भर गए हुए थे। जब विश्वास होता है तो धीरे-धीरे पहले माल इत्यादि देने को दिल चाहता है। फिर जब बढ़ जाता है तो विश्वास वाला ख़ुदा के लिए जान देने को तैयार हो जाता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 42)

"हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने अपना सारा माल तथा सामान ख़ुदा तआला के मार्ग में दे दिया और आप कम्बल पहन लिया था मगर अल्लाह तआला ने इस पर उन्हें क्या दिया। सारे अरब का उन्हें बादशाह बना दिया और इसी के हाथ से इस्लाम को नए सिरे से ज़िन्दा किया और मुर्तद अरब को फिर फ़तह कर के दिखा दिया और वह कुछ दिया जो किसी के वहम तथा सोच में भी न था। अत: उन लोगों की सच्चाई तथा वफ़ादारी और श्रद्धा हर मुस्लमान के लिए आदर्श आचरण है। सहाबा रज़ि की ज़िन्दगी एक ऐसी ज़िन्दगी थी कि समस्त नबियों में से किसी नबी की ज़िन्दगी में यह उदाहरण नहीं पाया जाता असल बात यह है कि जब तक इन्सान अपनी इच्छाओं और उद्देश्यों से अलग हो कर ख़ुदा तआला के समक्ष नहीं आता वह कुछ प्राप्त नहीं करता बल्कि अपनी हानि करता है। लेकिन जब वह समस्त नफ़सानी इच्छाएं और उद्देश्यों से अलग हो जाए और ख़ाली हाथ और साफ़ दिल लेकर ख़ुदा तआला के हुज़ूर जाए तो ख़ुदा उस को देता है और ख़ुदा तआला उस का ध्यान रखता है। परन्तु शर्त यही है कि इन्सान मरने को तैयार हो जाए और उस की राह में अपमान और मौत को ख़ैर बाद कहने वाला बन जाए। देखो दुनिया एक नश्वर चीज़ है। परन्तु उस की लज़्ज़त भी इसी को मिलती है जो इस को ख़ुदा के लिए छोड़ते हैं। यही कारण है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला का मुक़र्रब होता है ख़ुदा तआला दुनिया में इस के लिए क़बूलीयत फैला देता है। यह वही क़बूलीयत है जिसके लिए दुनियादार हज़ारों कोशिशें करते हैं कि किसी तरह कोई ख़िताब मिल जाए या किसी इज़्ज़त की जगह या दरबार में कुर्सी मिले और कुर्सी नशीनों में नाम लिखा जाए। अत: समस्त दुनयावी इज़्ज़तें उसी को दी जाती हैं और हर दिल में इसी की महानता और क़बूलीयत डाल दी जाती है जो ख़ुदा तआला के लिए सब कुछ छोड़ने और खोने पर तत्पर हो जाते हैं। न कावल त्तपर बल्कि छोड़ देते हैं। अत: यह है कि ख़ुदा तआला के लिए खोने वालों को सब कुछ दिया जाता है। ज़मीनी गर्वनमैंटों के लिए जो ज़रा सा कुछ गँवाता है उनको बदला मिलता है। तो जो ख़ुदा के लिए गँवाए तो क्या उसे बदला न मिलेगा?और वे नहीं मरते हैं जब तक वे इस से बहुत अधिक पा न लें जो उन्होंने ख़ुदा तआला की राह में दिया है। ख़ुदा तआला किसी का क़र्ज़ अपने ज़िम्मा नहीं रखता। परन्तु अफ़सोस यह है कि इन बातों को मानने वाले और उनकी हक़ीक़त पर सूचना पाने वाले बहुत ही कम लोग हैं।" (भाग 5 पृष्ठ 398-399)

सम्पादकीय आं हज़रत सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा का का उच्च स्थान

नबियों के बाद धरती पर सबसे पवित्र जमाअत सहाबा किराम की होती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा भी न केवल उम्मत के लिए रहनुमा तथा मार्ग दर्शक हैं बल्कि मानव जाति के लिए सम्मान योग्य हैं। ये वे पवित्र हस्तियाँ हैं जिनकी आँखें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर्शन से प्रकाशित हुईं ,और जिन्हें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगत ने प्रकाशित किया और उनके आचरण विचारों को मार्ग दर्शन प्रदान किया। उनसे मुहब्बत रखना ईमान ही है , और उनसे किसी किस्म का द्वैष रखना मुनाफकत है। चूँकि अल्लाह-तआला ने ख़ातमुल अंबिया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म की प्रचार प्रसार के लिए उन्हें चुना। उन्होंने हर प्रकार की क़ुर्बानी दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के बाद मृत्यु तक उसी पर बरक़रार रहे। सय्यदना हज़रत अक़दस मुहम्मद रसूलुल्लाहो सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्वाणियों के अनुसार चौदहवीं सदी हिज्री में आपके आध्यात्मिक पुत्र हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम मुजद्दिद और मसीह तथा महदी बन कर मबऊस हुए। जिनका उद्देश्य सूरत जुम्अ: की आयत 3 के अनुसार इस्लाम धर्मा का पुन: जागरण था। आपने "आख़रीन" के मिस्दाक़ अपने सहाबा को रसूलुल्लाह के साहाबा से तुलना करते हुए फ़रमाया:

मुबारक वह जो अब ईमान लाया
सहाबा रज़ि से मिला जब मुझको पाया

सूरह: जुम्अ: में वर्णित सहाबा रसूल से समानता रखने वाली जमाअत की भविष्यवाणी का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"सम्मान वाला अल्लाह तआ उनके हक़ में फ़रमाता है कि वे आख़िरी ज़माना में आने वाले ख़ालिस और कामिल बंदे होंगे जो अपने कमाल ईमान और कमाल अख़लाक़ और कमाल सच्चाई और कमाल दृढ़ता और कमाल मज़बूती और कमाल मार्फ़त (अनुभूति) और कमाल ख़ुदा तआला को पहचानने की दृष्टि से से सहाबा के रंग वाले होंगे।"

(आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 5 पृष्ठ 213)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम एक अवसर पर सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम का स्थान बयान फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं कि

"सहाबा किराम की वह पवित्र जमाअत थी जो अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कभी अलग नहीं हुए और वे आपकी राह में जान देने से भी पीछे न होते थे बल्कि पीछे नहीं हुए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन में ऐसे गुम हो गए कि वह उस के लिए हर एक तकलीफ़ और मुसीबत उठाने को हर समय तैयार थे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 277)

अहमदिया जमाअत के संस्थापक ने अपनी जमाअत को यह स्थायी वसीयत फ़रमाई है कि "तुम जो मसीह मौऊद की जमाअत कहला कर सहाबा की जमाअत से मिलने की इच्छा रखते हो अपने अंदर सहाबा का रंग पैदा करो। आज्ञापलन हो तो वैसी हो। आपस में मुहब्बत और भाईचारा हो तो वैसा हो। अत:

हर रंग में हर रूप में तुम वही शक्ल धारण करो जो सहाबा की थी।"

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद सूरत अन्निसा आयत 59)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाब से इसी तुलना पर हमारे मौजूदा इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने जुम्अ: के ख़ुत्बों में बदरी सहाबा की सीरत पर आधारित का ईमान बढाने वाले सिलसिला को शुरू फ़रमाया हुआ है। आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ऊपर वर्णन किया हुआ उद्धरण पेश करते हुए फ़रमाया

"अगर जमाअत की तरक़्क़ी को हमेशा क़ायम रखना है ,ख़िलाफ़त के निज़ाम के स्थायी रहने के लिए कोशिश करनी है तो फिर जमाअत के अन्दर नमूने भी स्थायी रूप से क़ायम रखने पड़ने हैं। तभी वे उन्नतियां भी मिलेंगी जो पहले मिलती रही हैं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 25-मई 2018 ई)

मौजूदा दौर में भी सहाबा किराम की तरह अहमदियत के मार्ग में आने वाली मुसाबतों का मुक़ाबला करने की अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

दिल-शिकस्ता हम न होंगे ज़ुलम की यलग़ार से
ख़ुद को वाबस्ता रखेंगे क़ाफ़िला सालार से
इक ताल्लुक़ है हमारा यूसुफ़े दौरां के साथ
एक निसबत है हमें इस अह्द के अवतार से

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

सहाबा का नमूना अपनी जमाअत में देखना चाहता हूँ।

अल्लाह तआला की यह पुरानी आदत है कि जब वह किसी नबी को भेजा करता है तो उस की सहायता के लिए ऐसे लोगों को उस नबी पर ईमान पर लाने की तौफ़ीक़ देता है जो सुलतान नसीर (महान सहायक) बन कर खड़े हो जाते हैं। अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सब से उच्च स्तर के सहाबा प्रदान किए। इन सहाबा कराम रज़ि के माध्यम से अल्लाह तआला ने न केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत तथा सुन्नत को आम किया है बल्कि उन के माध्यम से सारे संसार में इस्लाम को फैला दिया है। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने विभिन्न आयतों में इन सहाबा रज़ि की हालात को वर्णन किया है। और यहां तक फ़रमाया رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡہُ कि अल्लाह तआला उन से राज़ी हुआ और वे अल्लाह तआला से राज़ी हुए। सहाबा रज़ि समस्त मुस्लमानों के लिए एक नमूना हैं। इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: اَصۡحَابِیۡ کَالنُّجُوۡمِ فَبِاَیِّہِمُ اقۡتَدَیۡتُمۡ اِہۡتَدَیۡتُمۡ ।(मिश्कात किताबुल मनाक़िब ,मनाक़िब अलसहाब पृष्ठ 554 अर्थात मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं। उनमेंसे जिसका भी तुम अनुकरण करोगे , हिदायत पा जाओगे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे गुलाम हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी हमें सहाबा के नमूना को अपनाने की नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं

"मैं यही नमूना सहाबा रज़ि का अपनी जमाअत में देखना चाहता हूँ कि अल्लाह तआला को वे मुक़द्दम कर लें और कोई बात उन की राह में रोक न हो। वे अपने माल तथा जान को तुच्छ समझें। मैं देखता हूँ कि कई लोगों के कार्ड आते हैं। किसी व्यापार या और काम में नुक़्सान हुआ या और किसी प्रकार की मुसीबत आई तो झट शंकाओं में पड़ गए। ऐसी अवस्था में प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि मूल मतलब और मक़सद से वे कितना दूर हैं। ग़ौर करो क्या अन्तर है सहाबा में और उन लोगों में। सहाबा रज़ि यह चाहते थे कि ख़ुदा तआला को राज़ी करें चाहे इस मार्ग में कैसी ही सख़्तियां और तकलीफ़ें उठानी पढ़ें। अगर कोई कष्ट और मुश्किलों में न पड़ता और उसे देर होती तो वह रोता और चिल्लाता था। वे समझ चुके थे कि इन परीक्षाओं के नीचे ख़ुदा तआला की रज़ा का परवाना और ख़ज़ाना छुपा है....क़ुरआन शरीफ़ उन की प्रंशसा से भरा हुआ है। उसे खोल कर देखो। सहाबा रज़ि की ज़िन्दगी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई का व्यावहारिक सबूत था। सहाबा रज़ि जिस मुक़ाम पर पहुंचे थे उस को क़ुरआन शरीफ़ ने इस तरह पर वर्णन फ़रमाया है।مِنۡہُمۡ مَّنۡ قَضٰی نَحۡبَہٗ وَمِنۡہُمۡ مَّنۡ یَّنۡتَظِرُ (अलअहज़ाब 24) अर्थात कुछ उनमें से शहादत पा चुके और उन्होंने मानो मूल लक्ष्य को प्राप्त कर लिया और कुछ इस प्रतीक्षा में हैं कि चाहते हैं कि शहादत नसीब हो। सहाबा रज़ि दुनिया की तरफ़ नहीं झुके कि उमरें लंबी हों और इस क़दर माल तथा दौलत मिले और यूं बेफ़िकरी और ऐश के सामान हों। मैं जब सहाबा रज़ि के इस नमूने को देखता हूँ तो

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत क़ुदसी कमाल फ़ैज़ान का अपने आप इक़रार करना पड़ता है कि किस तरह पर आपने उनकी काया पलट दी और उन्हें बिलकुल ख़ुदा तआला के समक्ष कर दिया। اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 82-83)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल उल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अत: ये सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम का वह मुक़ाम है जो हर अहमदी को अपने सामने रखना चाहिए। जब हम सहाबा की सीरत के बारे में पढ़ते हैं और उनके व्यावहारिक नमूनों के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं तब ही उनका अहम मुक़ाम उभर कर सामने आता है और यह जो मुक़ाम है यह हमें इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाने वाला होना चाहिए कि उनकी सीरत, उनका आदर्श, उनके काम, उनकी इताअत, उनकी इबादत के स्तर हमारे लिए नमूना हैं और हम उनको अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाने की कोशिश करें।"

(ख़ुत्बा जुमा 16 मार्च 2018 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें अल्लाह तआला और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों पर अनुकरण करने, सहाबा रज़ि के नक़्श क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

हज़रत सूफ़ी नबी बख़्श साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के 313 प्रसिद्ध सहाबा में से एक

शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (नायब सदर सफ दोयम मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत)

सूरत जुम्अ: की आयत 4 में हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूसरे प्रादुर्भव का वर्णन किया गया है। इस का तफ़सीली वर्णन सही बुख़ारी में मौजूद है। अल्लाह तआला ने अपना रहम करते हुए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी अलैहिस्सलाम को आंहज़रत (स) का कामिल प्रतिरूप बना कर मबऊस फ़रमाया। और आपको मसीह मौऊद तथा महदी मौऊद का उच्च स्थान फ़रमाया। बल्कि इन सबसे बढ़कर आपको आँहज़रत ई की कामिल ग़ुलामी की में "ज़िल्ली नबुव्वत" का मुक़ाम प्रदान फ़रमाया।

आपके दावा के नतीजा में नेक और सईद रूहों की अल्लाह तआला ने मार्गदर्शन फ़रमाया। और उन्हें धीरे धीरे ज़माना के इमाम के दर पहुंचा दिया। उन्हें नेक , ख़ुशनसीब और सईद फ़ितरत लोगों में हज़रत सूफ़ी नबी बख़्श साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो भी हैं। आप को ज़माना के इमाम को देखने, उन पर ईमान लाने और आपकी पवित्र संगत से लाभांवित होने का सौभाग्य नसीब हुआ आप ने 1891 ई में ज़माना के इमाम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की।

इसी तरह आप इबतिदाई अस्हाब अहमद में शामिल थे। आपको यह ख़ुशनसीबी भी प्राप्त हुई कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम ने अंजामे आथम में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के पूरा होने के अन्तर्गत अपने विशेष 313 अस्हाब का वर्णन फ़रमाया। उस में हज़रत सूफ़ी नबी बख़्श साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो को भी 73 वें नम्बर में शामिल फ़रमाया। इन 313 सहाबा के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विशेष रूप से उल्लेख किया है।

हज़रत सूफ़ी नबी-बख़्श साहब रज़ि अल्लाह ने 27 दिसम्बर 1891 ई को बैअत की। लेकिन इस से पहले ही आपका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सम्पर्क पैदा हो चुका था। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की विभिन्न पुस्तकों में आपका नाम नबी बख़्श साहिब, मियां नबी बख़श साहिब, मुंशी नबी बख़्श साहिब ,बाबू नबी बख़्श साहिब भी लिखा है। आपको रावलपिंडी, पाकिस्तान का पहला अहमदी होने का सम्मान प्राप्त है। आपने अपनी जावनी अख़बार अल-हकम 14 अप्रैल 1935 ई में लिखी की हैं। इस की की रोशनी में आपकी कुछ रिवायतें लिखी जा रही हैं। इन रवायतों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र ज़िन्दगी के कई अध्याय हमारे सामने आते हैं। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे के हम इन नेक नसीहतों पर अनुकरण करने वाले हों। आमीन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम से हज़रत सूफ़ी नबी बख़्श साहिब रज़ि की पहली मुलाक़ात

हज़रत सूफ़ी नबी-बख़्श साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो लिखते हैं कि

"13 जून 1886 ई की घटना है पण्डित लेखराम पेशावरी ने एक इश्तिहार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इश्तिहार के विरोध में प्रकाशित

किया। जिसमें आप ने एक बशीर लड़के के जन्म के बारे में भविष्यवाणी की थी

इस इश्तिहार में पंडित लेखराम ने अपनी फ़ित्रत के अनुसार बुरा भला कहने और गाली गलोच से काम लिया। संयोग से वह इश्तिहार मेरी नज़र से भी गुज़रा। मैंने पूछने के लिए हज़रत साहिब की सेवा में एक कार्ड लिखा लेकिन ज्ञान न होने के कारण ऐसे तरीका से लिखा गया कि हुज़ूर ने मुझे विरोधियों में से विचार किया।

कर्मों का फल निय्यतों के अनुसार है कि अनुसार कि हज़रत साहिब ने कुछ मुख़लिस दोस्तों से ख़त के द्वारा विनीत के बारे में पूछा। जिन्होंने दया करते हुए हुज़ूर की तसल्ली की और लिखा कि यह व्यक्ति हमेशा से प्रशंसक रहा है। इस के बाद आपने एक इश्तिहार प्रकाशित किया। जिस के आरम्भ में ये शेअर दर्ज था

हमने उलफ़त में तेरी बार उठाया क्या-कया

तुझको दिखला के फ़लक ने ही दिखाया क्या-क्या

इस इश्तिहार को पढ़ने और बराहीन अहमदिया के बार-बार अध्ययन से मेरे दिल में एक उमंग पैदा हुई कि मैं ख़ुद कादियान जा कर हज़रत साहिब से मुलाक़ात करूँ क्योंकि ख़ुदा तआला के चुने हुए बंदों का दर्शन गुनाहों को दूर करता है। इस नीयत से अक्तूबर 1886 ई को मैं पहली बार सेवा में हाज़िर हुआ। और मग़रिब की नमाज़ मैंने मस्जिद मुबारक में हज़रत अक़दस के अनुकरण में पढ़ी नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद आप वहीं बैठ गए और बतौर नसीहत संक्षिप्त शब्दों में तक़रीर फ़रमाई जिस क़ा सार यह था

मुस्लमान का धर्म से अज्ञानता करना उन के पतन का कारण हुआ है। जब वे धर्म को मज़बूत पकड़ेंगे तो फिर ख़ुदा तआला उन को वही महानता और शान एवं प्रताप प्रदान फ़रमाएगा। जो उन को पहले दी गई थी।"

(अख़बार अलहकम कादियान 14 अप्रैल 1935 ई पृष्ठ 5)

हज़रत सूफ़ी नबी-बख़्श साहिब रज़ि की बैअत

हज़रत सूफ़ी नबी-बख़्श साहिब रज़ि लिखते हैं कि "अप्रैल 1889 ई से अप्रैल 1892 ई तक विनीत अंजुमन हिमायत इस्लाम का मुहतमिम कुतुब ख़ाना रहा। और हुज़ूर का निबन्ध "एक ईसाई के तीन सवालों का जवाब" मेरे ही प्रबन्धन से छापा गया।

एक बार आदत के अनुसार अंजुमन के कुतुब ख़ाना में गया। इन दिनों रिसाला फ़तह इस्लाम छप चुका था। इस की एक कापी उस के अंजुमन के दफ़्तर में पहुंची। बहुत से मौलवी साहिब जिनमें प्राय अहले हदीस थे उस को पढ़ते और बहुत आश्चर्य से कहते कि जो कुछ मिर्ज़ा साहिब ने इस रिसाला में लिखा है इस को कोई भी नहीं मानेगा मगर यह रिसाला भी लाजवाब है इस का भी कोई जवाब नहीं। इस के बाद रिसाला तौज़ीहुल मराम भी मेरी नज़र से गुज़रा। इन दोनों रिसालों के प्रकाशित होने के बाद हिन्दुस्तान में एक सख़्त तूफ़ान बरपा हुआ। और हर तरफ़ से मौलवी साहिबों ने कुफ्र के फ़तवे तैयार किए यहां तक के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कादियान में एक जलसा करने की ज़रूरत महसूस हुई। मुझे भी एक कार्ड पहुंचा। लेकिन कुछ ज़रूरी घरेलू कामों के कारण से मैंने सेवा में हाज़िर होने से इन्कार किया। लेकिन इसी सप्ताह में फिर दुबारा कार्ड पहुंचा जिसके शब्द ये थे

"दिसंबर की छुट्टियों में आप ज़रूर तशरीफ़ लाएंगे। और ख़ुदा तआला से दुआ करें कि वह

आपको अपने विशेष जज़्बे से अपनी तरफ़ खींच ले।"

ज़ुहर की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर मैंने इस ख़त को पढ़ा। और मुझ पर इस का ऐसा प्रभाव हुआ कि मैंने समस्त उन घरेलू बातों को जिनकी कारण से कादियान आने से मैंने मना किया थी ख़ैर कहा और सुदृढ़ इरादा किया कि कादियान जाना है।

सार यह कि 27 दिसम्बर 1891 ई के जलसे पर जिसमें हाज़िरीन की संख्या 80 के क़रीब थी। में भी सेवा में हाज़िर हुआ। और दिन के दस बजे के क़रीब चाय पीने के बाद इरशाद हुआ कि सब दोस्त बड़ी मस्जिद में जो अब मस्जिद अक्सा के नाम से मशहूर है तशरीफ़ ले जाएं।

आदेश के अनुसार सब के साथ में भी हाज़िर हुआ। मेरा सौभाग्य कि मेरे लिए अल्लाह तआला ने इस चुने हुए की जमाअत में दाख़िल होने के लिए यही दिन निर्धारित कर रखा था। उस वक़्त मस्जिद इतनी खुली न थी जैसी आज नज़र आती है। सब के बाद हज़रत ख़ुद तशरीफ़ लाए और मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो " फ़ैसला आसमानी" सुनाने के लिए मुक़र्रर हुए। लेकिन मेरे लिए एक आश्चर्य का स्थान था क्योंकि जब मैंने हज़रत अक़दस के मुबारक चेहरे और लिबास की तरफ़ देखा तो वही शक्ल थी और वही लिबास पहना था जिसको छात्र जीवन में मैंने देखा था।

हाज़िरीन तो बड़े ध्यान से आसमानी फ़ैसला सुनने में व्यस्त रहे। और मैं अपने दिल के विचारों में डूबा हुआ था और फ़ैसला कर रहा था कि वही नूरानी सूरत है जिसको छात्र जीवन के ज़माना में मैंने ख़्वाब में देखा था। इस के बाद जलसा समाप्त हुआ। और हर एक हज़रत साहिब से हाथ मिलाता और विदा होता। मैंने जान बूझ कर सब से पीछे हाथ मिलाया किया। और निवेदन किया कि मेरे लिए क्या आदेश है। क्योंकि मैंने एक व्यक्ति की आगे बैअत की हुई है। आप ने फ़रमाया।

"आपकी बैअत नूरून अला नूर(नूर पर नूर) होगी शर्त यह कि वह व्यक्ति नेक है। वर्ना बैअत टूट जाएगी और हमारी बैअत रह जाएगी।"

(अख़बार अलहकम कादियान 14 अप्रैल 1935 ई पृष्ठ 6)

जब ख़ुदा है तो सिफ़ारिश की क्या ज़रूरत है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कई अवसरों पर अल्लाह तआला पर विश्वास करने की नसीहत फरमाई है। इस बारे में सूफ़ी नबी-बख़्श साहिब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो लिखते हैं कि

"एक बार मैं सेवा में हाज़िर हुआ और एकान्त में मिलने का अवसर मिला। एक ज़रूरत थी। मैंने निवेदन किया कि हुज़ूर मुझे मियां चिराग़ुद्दीन साहिब के नाम सिफ़ारिश लिख दें कि मेरी इस काम में मदद करें। आपने फ़रमाया

" जब ख़ुदा है तो सिफ़ारिश की क्या ज़रूरत है।"

ख़ुदा तआला की क़ुदरत वह मेरा काम बिना सिफ़ारिश के हो गया।

(अख़बार अलहकम कादियान 14 अप्रैल 1935 ई पृष्ठ 6)

अल्लाह तआला हज़रत सूफ़ी नबी-बख़्श साहिब रज़ि और उन के ख़ानदान पर अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमाए। और हमें सहाबा किराम के पवित्र नमूना को अपनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन